NH Debate - 14

गाँव-गोत्र में शादी पर प्रतिबंध वाले जाट समाज में क्या आशिकी नहीं करते या प्यार नहीं जानते?

बिलकुल जानते हैं जी क्यों नहीं जानते, जिनके कुलों -वंशों में हीर-राँझा से ले शशि-पन्नू, शीरी-फरहाद, साहिबा-मिर्जा, लीलो-चमन और धर्मेन्द्र-हेमामालिनी जैसी कालजयी प्रेम कहानियां हुई हों उनके यहाँ ये कैसे हो सकता है कि वो प्यार करना ना जानते हों? पौराणिक गाथाओं में भगवान कृष्ण-रुक्मणी *(भरतपुर की विश्व-विख्यात जाट रियासत चन्द्र (कृष्णी)-वंशी है)* और अर्जुन-सुभ्धरा की जोड़ियाँ भी तो जाट ही सुनती आई हैं|

वो क्या है कि जाटों के गाँव-गोत्र में आशिकी वाला प्यार मान्य नहीं है लेकिन हर गाँव के साथ प्यार के किस्से दहाई के आंकड़ों में मिल जायेंगे| यकीन नहीं होता ना अजी होगा भी कैसे, इन जाटों में इन चीजों को गाने-बिगोने की बिमारी जो नहीं| वो क्या है कि पास-पड़ोस में ऐसी शादी हुई भी होती है तो सब सामान्य तौर पर प्रतिक्रिया देते हैं, वो किसी N.D. T.V. के रविश कुमार की तरह गाहे-बगाहे हमलोग से ले हर कार्यक्रम में अपने प्रेम-विवाह को गा के, ऐसे जताते प्रतीत नहीं होते हैं कि जैसे हिंदुस्तान की धरती पर बस यही जनाब हुए हैं जिन्होंने प्रेम-विवाह नामक प्रथा का सर्वप्रथम आगाज किया हो और बस एक इन्हीं का प्रेमी-जोड़ा हुआ है पूरे भारतवर्ष में|

वैसे ये तो दावा नहीं करूँगा कि हर जोड़ा प्रेम-विवाही होता है परन्तु किस्से जितने कहो उतने सुना दूंगा| जैसे कि:

1. कभी कोई भतीजा- भतीजी अपनी बुआ की ससुराल रहने गया और वहाँ किस्मत से बुआ की देवरानी-जेठानी की भतीजी-भतीजा मिल गई तो प्यार होने का मौका रहता है और प्यार की कहानियाँ बनती हैं|
2. भाई को भाई की साली पसंद आ जाये तो भाभियों के मान-मनुहार के किस्से और भाभी से उनकी बहन को अपने लिए लाये जाने की कवायदें तो शायद हर दुसरे-तीसरे जाट-परिवार में मिल जाएगी|
3. गावों में ऐसी जोड़ियाँ भी बहुत मिलती हैं जिनमें 2 बहनें चाचा-भतीजे के यहाँ बयाही आई होती हैं, ऐसी जोड़ियों में प्रेम-कहानियां मिलने के बड़े किस्से मिलते हैं| जैसे कभी भतीजा चाची के साथ उनके मायके गया हो तो वहाँ चाची के चाचा-ताऊ की बहन-भतीजी पसंद आ गई तो फिर चाची को सिफारिस लगाई जाती है कि मेरी फलानी से शादी करवा दो|
4. भाई अपनी बहन की ससुराल गया हो और उसको वहाँ उस गाँव की या बहन की ससुराल की रिश्तेदारियों में कोई लड़की पसंद आ जाए तो फिर बहनें अपने भाई की शादी की जुगत भिडाती हैं, ऐसे किस्से भी बहुतायत में जाटों में होते हैं|
5. कोई अपने मामा के यहाँ गया हो या गई हो तो वहाँ मामी के मायके से कोई लड़का या लड़की आई हो और आपस में पसंद आ जाएँ तो ऐसे में मामी जरिया बनती हैं उन दोनों की शादी करवाने का|
6. और आजकल बिना रिश्तेदारी के बीच में हुए भी प्रेम-विवाह बहुत होने लगे हैं और पहले भी होते आये|

तो यार जब इतने options उपलब्ध हैं तो जरूरी है क्या अपनी सभ्यता का अपने हाथों गला घोंटना?